JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अप्रकाशित कलात्मक शिव मंदिर–बनियानी

डॉ. मुक्ति पाराशर

कला इतिहास श्री

कोटा शिल्प रचना व वास्तुकला का संबंध प्राचीन समय से रहा है। हम यू कह सकते है कि शिल्प वास्तु की एक सहायक शाखा है। मंदिर के साथ मूर्ति यानि मोक्ष जैसी निवृत्ति मागी पुरूषार्थ की कल्पना है।

राजस्थान में प्राचीन कला के साक्ष्य काफी स्थान पर प्राप्त हुए है और हाड़ौती की भौगोलिक एवं एतिहासिक कारणों से मूर्तिकला व मंदिर के सर्वोत्तम उदाहरण प्राप्त होते है। इसी क्रम में कोटा क्षैत्र के मंदिर व मूर्तिकला की श्रेणी में एक स्थान ऐसा भी है जो पुरातत्व विभाग की दृष्टि में अनदेखा किया जा रहा है। यह स्थान है– बनियानी का प्राचीन शिव मंदिर।

कोटा मुख्यालय से दक्षिण की ओर 31 किलोमीटर दूर लाडपुरा तहसील का एक गांव है जिसका रस्ता कोटा से कैथून, धाकड़खेडी व अरण्डखेड़ा होते हुए वहॉ से 7 किलोमीटर दूर स्थित है। इस गांव के अन्तिम छोर पर एकान्त में यह शिव मंदिर है एवं इसके सामने हनुमान मंदिर स्थित है। आज यह मंदिर काफी हद तक मग्न हो चुका है किन्तु यहॉ गर्भगृह में रखे शिंवलिंग की पूर्जा–अर्चना आज भी गांव का पुजारी करता है और शिव रात्री पर विशेष आयोजन किया जाता है। गांव वालों ने देख रेख के कारण मूर्तियों पर हरा व सफेद चूना रंग दिया जिसके कारण कुछ मूर्तियां स्पष्ट दिखाई नही देती।

हमने जब स्वयं इस मंदिर को देखा और विश्लेषण किया तो इससे सम्बन्धित कई भ्रान्तियॉ दूर हुई। क्विंदेती के अनुसार इसे एक रात में भूतो द्वारा बनाया गया मंदिर कहा गया था और हजारों साल पहले निर्मित हुआ बताया गया किन्तु जब हमने इसका विश्लेषण कर इस मंदिर का विवरण प्रस्तुत किया । इस मंदिर की वास्तु स्थापत्य देखने से यह मंदिर 10वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य इसका निर्माण प्रतीत होता है। 15वीं शताब्दी में इसका पुनः जीर्णोद्वार हुआ जो एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है। किन्तु स्पष्ट पढने में नही आ पाया।

यह मंदिर देखने से अंलकरणों की दृष्टि से नागर शैली का एवं मारू गुर्जर शैली का प्रभाव है। इसकी बनावट बहुत सुन्दर रही होगी। यह प्रतिहार कालीन मंदिर है। यह मंदिर से लगभग 5 फीट ऊचाई पर है। इस मंदिर पर कई आक्रमण हुए इस कारण यह जर्जर अवस्था में है। इसके अवशेष आस पास के क्षेत्र में बिखरे पडे है।

इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यह मंदिर भैसासुर द्वारा अपनी मॉ के लिए बनवाया गया था। इसके पीछे भी रोचक कहानी है। इस मंदिर के निकट दो कुंड ;बावड़ीद्ध जैसी संरचना बनी है जिसमें एक बड़ा सास द्वारा व छोटा बहुद्वासरा बनावाया गया है और यह एक रात में पूर्ण किया गया था। वो कुंड भी बहुत क्षती द्वारा ग्रस्त हो चुका है।

मंदिर संरचना देखे तो मंदिर में प्रवेश करने के लिए कुछ सीढ़ियॉ है क्योकि मंदिर का आन्तरिक भाग का आघार ऊॅचा है। फिर मंदिर में प्रवेश द्वार है उसके बाद मण्डप है जो गोलाकार है एवं ऊपरी भाग खुला हुआ है। मंदिर का मण्डप स्तम्भो पर टिका है। ये स्तम्भ दुबारा बिना चूने के केवल पत्थरों को जमा कर गांव वालों के प्रयासों से जमाये हुए है।

गर्भगृह मंदिर का ह्रदय स्थान है। यह मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा हो जाने के बाद अत्यन्त पवित्र स्थान माना जाता है। इसमें शिव मंदिर में शिवलिंग की स्थापना गर्भगृह के बीचों बीच ;मध्यद्ध में होती है और विष्णु आदि की मूर्तिया प्रायः पिछली दिवार के सहारे रखी जाती है। बनियानी मंदिर को गर्भगृह में मध्य में शिवलिंग स्थापित है जो बहुत पुराना है। गर्भगृह की लम्बाई व चौडाई 7ग्7 फीट वर्गाकार है। गर्भगृह की कुल ऊचाई अन्दर से लगभग 12 फीट है। गर्भगृह की दिवारे सपाट है किन्तु ध्यान से देखने पर ऐसा लगता है कि उसके ऊपर भी अंलकृत शिल्प उत्कीर्ण रहे होगे । गर्भगृह के ऊपर की छत चार चार पत्थरों की सोपानवत रूपर में तिरछी अष्टकोणीय तरीके से पत्थर जमें हुए है जो कि सुन्दर तरीके से चुनी गई है। ऐसी छत हाड़ौती में बास्थूनी , मानस गांव जैसे कई शिव मंदिरों में बनी है। गर्भगृह की बनावट मेनाल व मानस शिव मंदिर जैसी दिखाई देती है। इस मंदिर का द्वार व सिरदल छोटी छोटी आकृतियों में कई देवी देवताओं की मूर्तियॉ से सुस्जित व अंलकृत है। गर्भगृह के ऊपर छत पर दोहरे फूल का गोलाकार अंलकरण है । द्वार की लम्बाई अन्दर से 6ग्3 फीट ऊॅची व चौडी है तथा अर्ध मण्डप की लम्बाई व चौडाई लगभग 10ग्9 फीट व 7 फीट 2 इंच है। मंदिर के मण्डप की चौडाई व लम्बाई 35 फीट 2 इंच एवं 40 फीट है। मण्डप के अन्दर से ऊपरी भाग गोलाकार है इसकी छत नही है। मण्डप की चौडाई में दोनो ओर पार्श्व में छोटे गर्भगृह जैसे कोठरी है किन्तु वो पूर्ण रूप से खण्डहर हो गयी है केवल उसका ऊपरी भाग स्तम्भो से ऊॅठा है। सम्पूर्ण मंदिर की आकृति देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें एक बडा शिखर रहा होगा क्योकि प्राचीन नागर शैली के शिखर से अवशेष पास ही बनी बावड़ी में देखे जा सकते है। जो कि हाडौती के अन्य मंदिरों से साम्यता रखते है नागर शैली में भी या लतिन शिखर रहा होगा। और मंदिर पर आमलक एवं कलश व ध्वज

के लिए जगह बनाई जाती थी जो इस मंदिर के भग्न शिखर के टुकड़ों से पता लगता है। वर्तमान में जो शिखर गर्भगृह परं है वो बाद का बना है जो बिल्कुल ही सादा व बनावट में भी अलग है जो कि इस समय के शिव मंदिरों में ऐसा शिखर कही नही है और मंदिर स्थापत्य से इसकी कोई समानता नही है। मंदिर का पुनःनिर्माण करने का प्रयास किया है और मूर्तियों व वास्तु खण्डों में क्रमबद्वता नही है क्योकि यह अव्यवस्थित ढंग से चुन दिये गये है और कई टुकडे बिना चुने सहारा देकर टिका दिये गये है । गर्भगृह में तीन शिवलिंग वर्तमान में रखे है। एक मुख्य शिवलिंग है। दो अन्य शायद शिवलिंग मंदिर लाकर रखे गया है जो मंदिर में ही कभी स्थापित रखे गये होगे। इनमें एक शिवलिंग पंच शिवलिंग है और ऐसा शिवलिंग कोटा में चम्बल के किनारे स्थित कान्हा कराई में भी बना हुआ है। मंदिर जीर्णशीर्ण है किन्तु बहुत कलात्मक है। इसे देवल कहा जाता है क्योकि इसमें गर्भगृह, शिखर, नन्दीमण्डप व शिवलिंग बनाया गया है।

मंदिर के द्वार मुख अंलकृत मूर्तियों से सुशोभित है जिसने योगीरूप में शिव, देवी, द्वारपाल व द्वारपालिकाऐं, योगिनी,कई अंलकरण सुश्योभित है। द्वार शाखाये अत्यधिक अंलकृत है किन्तु उन पर चूना रंग नें से अंलकरण स्पष्ट दिखाई नही देते है। गर्भगृह के द्वार के उतरांग ललाट बिम्ब पर शिव के शिल्प का अंकन है एवं अन्य देव जिनमें गणेश, मातृकाएँ एवं नवगृहों चर्तुतस्त दुर्गा, ध्यानावस्था पार्वती का भी अंकन है। गर्भगृह के बाहर अन्तराल अर्द्व स्तम्भ युक्त है और दोनो तरफ की दिवार पर नदियों ; गंगा यमुना द्ध का मानवीय अंकन है। इसी एक बायी ओर के स्तम्भ पर एक छोटा सा लेख है जो 1500 ई में इस मंदिर के पुनः निर्माण का संकेत देता है। मंदिर का मंडप स्तम्भ युक्त है। इसमें भी दोनो तरफ की दीवारों का पुनः निर्माण किया प्रतीत होता है वो भी लगभग गिर चुकी है। छत के ऊपर तीनों ओर 21 ग्रीव बने है। इनमें सुन्दर देव मूर्तियॉ है, बेलबूटों, पत्तियों, फूलों के अलंकरण व कई ज्यामितिय आकृतियॉ बनी है। मंदिर मंडल की छत गोलाकार व बिना छत का है। मंदिर में कुछ खण्डित मूर्तियॉ रखी है जिनमें एक विष्णु मूर्ति व दूसरी शेषशायी विष्णु स्थानक देवी का अर्घउत्कीर्ण खण्ड है। मण्डप की ऊपरी पट्टी पर देवी लक्ष्मी का अभिषेक करते हुए दोनो तरफ गज बने है जो गजलक्ष्मी की प्रतिमा को दर्शाते है। मण्डप में उल्टी आम की पत्तियों जैसे अंलकरण बने है।

एक खण्ड पर सूर्य प्रतिमा का अंकन है। यहॉ नवदेवी , चामुण्डा, महिषासुरमर्दिनी, अपने आसन पर अस्त्र–शस्त्रों व शक्ति के साथ उत्कीर्ण है। इन्ही के साथ गणेश प्रतिमा भी बनी है। मंदिर के बिल्कुल बाहर पेड के नीचे दो बडे खंडीत नन्दी की प्रतिमा है जो सादा काले पत्थर की है। इन्ही के बीच एक पत्थर पर चरण चिन्ह अंकित है।

मंदिर के तीनों ओर बाहरी दिवारों पर ताखे बनी है जिनमें कुछ में मूर्तियॉ है जिनमें चामुण्डा, अंगडाई लेती नायिका सुकन्या आदि है और कुछ ताखे मूर्तिविहीन है। मंदिर की बाहरी भित्ति पर ज्यामितिय अंलकरण से दिवारे सुसज्जित है। एक ध्यानावस्था देवी प्रतिमा का खण्ड है किन्तु यह ज्यादा खण्डित होने के कारण

स्पष्ट नही है। सामने से मंदिर सादा है बस नीचे भित्ति पर ही अंलकरण है जिनमें बतख जैसी आकृतियॉ है। इसका स्थापन कोटा के मानस गांव के प्राचीन शिव मंदिरों से बहुत साम्यता रखता है।

हालांकि मंदिर अभी छोटी जगह पर ही है किन्तु किसी समय इसका परिसर बहुत विशाल था। दूर खेतों में यंत्र तंत्र इसके अवशेष बिखरे पडे है मंदिर से थोड़ी दूर एक जगह बड़ी शिला पत्थर पर एक हाथ उत्कीर्ण है कहा जाता है कि मंदिर बनाने के बाद राजा ने बनाने वाले कारीगर के हाथ काट कर पत्थर पर उत्कीर्ण करवाए थे।

आज इस कलात्मक व पुराने मंदिर का पुरातत्व विभाग द्वारा अनदेखी की जाने के कारण इस मंदिर का संरक्षण केवल गांव द्वारा किया जा रहा है इस मंदिर का ओर भी इतिहास रहा होगा किन्तु कोई अभिलेख प्राप्त नही है केवल स्थापाय व भग्नावशेष से इस स्वयं मंदिर की जानकारी प्राप्त की है। हाड़ौती में ऐसे कई स्थल है जिनका कलात्मक स्वरूप अनदेखी के कारण उपेक्षित व खण्डहर में बदल चुके है।